ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 742-745
www.allresearchjournal.com
Received: 27-10-2015
Accepted: 29-11-2015

डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
डॉ० दर्शन पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

जयशंकर प्रसाद कृत 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' में अभिव्यक्त शौर्य और पराक्रम की कथा

डॉ० दर्शन पाण्डेय

प्रस्तावना

छायावाद युग के पुरोधा कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित काव्य संग्रह 'लहर' (प्रकाशन वर्ष 1935) में संकलित 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' एक ऐतिहासिक कथा पर आधारित कविता है। लहर काव्य संग्रह में प्रसाद की प्रौढ़ कला के दर्शन होते हैं। यह उनकी एक उल्लेखनीय काव्य कृति है, इसमें कई स्फुट पद रचनाएँ संग्रहित हैं। 'लहर' काव्य संग्रह के प्रारंभ में एक लघु कविता लहर संकलित है, इसी को आधार लेकर इस काव्य संग्रह का नाम रखा गया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- 'लहर से कवि का अभिप्राय उस आनंद से है जो मनुष्य के मानस में उठा करती है और उसके जीवन को सरस करती रहती हैं।' [1] तात्पर्य है कि लहर प्रसाद की आंतरिक भावनाओं की प्रतीक है और कवि ने उसमें अपने अंतस्थल की मार्मिक अनुभूतियों का चित्रण किया है।

'लहर' में संकलित कविता 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत एक आख्यानपरक रचना है। प्रसाद जी की यह कविता तत्कालीन राजनैतिक वातावरण से प्रभावित है, इस दृष्टि से प्रस्तुत कविता का ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय महत्व है। यह कविता ऐतिहासिक इतिवृत्त पर आधारित है जो सिक्खों तथा अंग्रेजों के बीच द्वितीय युद्ध सन् 1849 ई० में लड़ा गया था, उससे संबंधित है। महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र की देख-रेख लालन-पालन व सुरक्षा का उत्तरदायित्व रंजीत सिंह की पत्नी के अतिरिक्त लाल सिंह नामक व्यक्ति पर भी आ गया था। लाल सिंह ने सिक्खों के साथ छल किया, अंग्रेजो ने उसे अपनी ओर मिला लिया। चिलियाँ वाला बाग नामक स्थान पर सिक्खों तथा अंग्रेजों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था, यह इतना भीषण युद्ध था जिसका अनुभव इंग्लैंड के शासकों तक ने किया। अंग्रेजी सेना के इस युद्ध में लगभग चौबीस सौ सैनिक मारे गए, वहीं युद्ध में लाल सिंह ने सिक्खों के साथ गद्दारी की। उसने तोपों में बारूद की जगह आटे और काठ के गोले भर दिए, सतलुज नदी का पुल तोड़ दिया जिससे सिक्खों को सेना की मदद ना मिल सकी, परिणामतः सिक्ख पराजित हुए और उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा। शेरसिंह एक ही सिक्ख योद्धा था, जिसने बड़े साहस पराक्रम एवं शक्ति से युद्ध किया, अंततः विवश होकर उसे भी जनरल गिल्बर्ट के सामने शस्त्र समर्पण करना पड़ा। प्रस्तुत प्रगीत में शस्त्र समर्पित करते हुए शेर सिंह की अंतर्कथा मूर्तिमान स्वरूप अंकित होती है-

" ले लो यह शस्त्र है
गौरव, ग्रहण करने का रहा कर मैं
अब तो न लेशमात्र।
लाल सिंह! जीवित कलुष पंचनद का
देख दिए देता है
सिक्खों का समूह नख-दंत आज अपना।"
"अरी रण-रंगीनी!
सिक्खों के शौर्य भरे जीवन की संगिनी!
कपिशा हुई थी लाल तेरा पानी पान कर।
दुर्मद तुरंत धर्म दस्युयों की त्रासनी-
निकल, चली जा तू प्रतारणा के कर से।" [2]

कविता का प्रारंभ शेर सिंह के हृदय में उत्पन्न लाल सिंह के प्रति क्रोध भाव तथा घृणा से होता है। शेर सिंह के हृदय में आत्मोत्सर्ग की भावनाएँ स्फूर्त होती हैं, वह देशद्रोही लाल सिंह के कृत्य से अत्यंत खिन्न है। वह विवश होकर कहता है कि मेरे शस्त्र ले लो! परंतु मैं अपने जाति के गौरव एवं सम्मान के आगे अपना शीश नहीं झुकाऊंगा, किसी तरह का समझौता नहीं करुंगा। इसमें तनिक भी संदेह नहीं रह गया कि लाल सिंह ने गद्दारी की, इसीलिए हम परास्त हुए। वह इस पंच-नद (पंजाब) का काला धब्बा है, जिसने सिक्खों के साथ छल किया, ऐसे कालुष्य को यह भूमि अभी जीवित रखे हुए हैं। शेर सिंह के मन की

खिन्नता और बढ़ जाती है, इसीलिए वह अपना सिंह- दंत दे देता है। अपनी तलवार को संबोधित करता हुआ कहता है, उनकी जीवन की संगिनी! जिस शौर्य और साहस से सिक्ख लड़े और अपना बलिदान कर दिया उससे कपिशा का जल भी लाल हो गया।

सिक्खों ने अपने शरीर के खून के एक-एक कतरे से इस 'पंच नद' की रक्षा करने का प्रयत्न किया, सिक्खों की वीरता की साक्षी उनकी तलवार जो धर्म की रक्षा के लिए ही उठती है और लुटेरों का डाकुओं का नाश करती है, आज अपने घर के ही एक व्यक्ति के कारण प्रताड़ित होने को विवश है। शेर सिंह अपनी तलवार को भी इस प्रतारणा के कर अर्थात बंधन से निकल जाने के लिए कहता है, क्योंकि सिक्खों की तलवार के शौर्य और प्रतिष्ठा की जो प्रसिद्धि है वह कहीं धूमिल ना हो जाए, इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों में शेर सिंह नामक सिक्ख योद्धा के हृदयगत अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्रसंगों के माध्यम से प्रसाद जी ने तत्कालीन संदर्भों को अभिव्यक्ति दी है, युगीन समस्या, देश-प्रेम का उद्बोधन एवं राष्ट्रीय चेतना का संचार करना उनका लक्ष्य रहा है।

"अरी वह तेरी रही अंतिम जलन क्या?
तोपें मुंह खोले खड़ी देखती थी त्रास से
चिलियान वाला में।
आज के पराजित जो विजयी थे कल ही,
उनके समर वीर कर में तू नाचती
लप-लप करती थी-जीभ जैसे यम की।
उठी तू न लूट त्रास भय के प्रचार को
दारुन निराशा भरी आंखो से देखकर
दृप्त अत्याचार को –
एक पुत्र वत्सला दुराशामयी विधवा
प्रगट पुकार उठी प्राण भरी पीड़ा से-और भी, " [3]

सिक्ख योद्धा शेर सिंह अपनी रण-संगिनी तलवार को संबोधित करते हुए उसके वीरतापूर्ण कृत्यों की स्मृति दिलाता है कि क्या वह तेरी अंतिम जलन अर्थात पीड़ा नहीं थी कि चिलियांवाला बाग में हमारी तोपें भय एवं त्रास के मारे केवल मुँह बाये खड़ी देखती रहीं। जिन तोपों से शत्रु को पराजित किया जा सकता था वह तोप निरर्थक हो गई क्योंकि उनके भीतर बारूद नहीं बल्कि लकड़ी और आटे के बारूद भर दिए गए जिस कारण हमारी पराजय हुई। शेर सिंह अपने अतीत का स्मरण करता है कि आज हम भले ही पराजित हुए हैं परंतु अतीत में हम विजयी थे। युद्ध के मैदान में हमारे सिक्ख वीर योद्धाओं के हाथों में तलवारें उनके इशारे पर नृत्य करती थीं। वीरों द्वारा की जाने वाली तलवारबाजी तथा युद्ध के समय शत्रुओं पर किये जाने वाले तलवार के प्रहारों को देखकर ऐसा लगता था कि जैसे यमराज की प्रलयंकारी जीभ लपलपा रही हो। तात्पर्य है कि सिक्ख वीरों की तलवारें मृत्यु की भयंकर लपलपाती जीभ जैसा दृश्य उपस्थित कर देती थी। परंतु आज सिक्ख वीरों में दुख और निराशा है, छल-प्रपंच भरे युद्ध से सिक्ख वीरों के हृदय में हताशा है। इस युद्ध में कितने ही वीर सैनिक सैनिक शहीद हो गए एक विधवा स्त्री जो अपने पुत्र को अत्यंत स्नेह करती थी, आज वह दुख और निराशा के मारे चित्कार कर रही है। उसका एकमात्र सहारा उसका लाडला इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ और न जाने कितनी ही ऐसी दुखी विधवाएं हैं, जिनका सब कुछ इस युद्ध में चला गया।

"जन्मभूमि दलित विकल अपमान से
त्रस्त हो कराहती थी
कैसे फिर रुकती?
"आज विजयी हो तुम
और हैं पराजित हम
तुम तो कहोगे, इतिहास भी कहेगा यही
किंतु यह विजय प्रशंसा भरी मन की-
एक छलना है।
वीरभूमि पंचनद वीरता से रिक्त नहीं।
काठ के हों गोले जहाँ
आटा बारूद हो।" [4]

अंग्रेजी सेना द्वारा सिक्खों को पराजित किया गया, छल-प्रपंच और धोखे के इस संग्राम में हमारी जन्मभूमि आज अपमानित हुई, यह अपमान केवल शत्रुओं के विजयी होने से नहीं है, बल्कि यह जन्मभूमि जननी जन्मभूमि इस कारण भी अपमानित है कि उसने लाल सिंह जैसे कपूत को जन्म दिया। जन्मभूमि की इस व्यथा एवं पीड़ा का कारण उसकी अपनी ही संतान है, जिसकी गद्दारी की वजह से आज हमें अपमानित किया गया और इस जन्मभूमि को शत्रुओं ने पद-दलित किया। शेर सिंह अपने शत्रुओं को संबोधित करते हुए कहता है कि यह तो तुम कहोगे ही कि अंग्रेज विजयी हुए और सिक्ख पराजित हुए, निश्चित रूप से इतिहास में भी यह तथ्य अंकित हो जाएगा कि सिक्ख सैनिक अंग्रेजों से पराजित हुए। परंतु तुम्हारी प्रशंसा, आत्मप्रशंसा भरी विजय क्या वास्तव में एक छलना नहीं है। तुम्हारी यह विजय क्या एक भ्रम नहीं है, सच्चाई क्या छुपी रह सकती है कि यह युद्ध कैसे लड़ा गया जहाँ धोखे एवं छल-प्रपंच से युद्ध लड़ा गया। वीरभूमि पंजाब प्रदेश वीरता से खाली नहीं है क्योंकि वीर कभी मरते नहीं, उनके रक्त की एक एक बूँद से वीरता की कई अमर कहानियाँ बनती हैं। शेर सिंह के हृदय में उमड़ती देश-प्रेम, जाति की गरिमा, वीरता का भाव लाल सिंह जैसे गद्दार सैनिक के प्रति घृणा तथा प्रजा के प्रति शोक दुख आदि भावों की यहाँ एक साथ अभिव्यक्ति मिलती है।

और पीठ पर हो दुरंत दंशनों का त्रास
छाती लड़ती हो भरी आग, बाहुबल से
उस युद्ध में तो बस मृत्यु की विजय है।
सतलज के तट पर मृत्यु श्यामसिंह की-
देखी होगी तुमने भी युद्ध वीरमूर्ति वह
तोड़ा गया पुल प्रत्यावर्तन के पथ में
अपने प्रवंचनों से।
लिखता अदृष्ट था विधाता वाम कर से
छल में विलीन बल-बल में विषाद था-
विकल विलास का।
यवनों के हाथों से स्वतन्त्रता को छीनकर,
खेलता था यौवन विलासी मत्त पंचनद-
प्रणय विहीन एक वासना की छाया में।
फिर भी लड़े थे हम निज प्राण पण से [5]

यह कहा जाता है कि युद्ध में सब कुछ जायज है, परंतु नैतिकता की कसौटी पर ऐसा युद्ध कभी भी न्यायोचित नहीं जो छल एवं धोखे से लड़ा जाए। सिक्खों के साथ छल किया गया उनके अपनों को लालच देकर शत्रुओं ने अपनी ओर मिला लिया, इस पर अपनों द्वारा ही पीठ पर धोखे से किए गए प्रचंड आक्रमणों से जो कष्ट हुआ वह असह्य है। उधर सिक्ख अपने शौर्य तथा पराक्रम से बहुत ही वीरता से लड़े उनकी छाती में शत्रुओं को खत्म करने की आग भरी हुई थी, वीर योद्धाओं ने हार नहीं मानी अंतिम सांस तक शत्रुओं से लड़ते रहे क्योंकि वीरों के लिए मृत्यु ही अंतिम सत्य है। प्राणों को न्यौछावर कर वे मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। शेर सिंह वृद्ध सैनिक श्याम सिंह की वीरता का स्मरण करता है कि किस प्रकार सतलुज नदी के किनारे वह शत्रुओं से लड़ते- लड़ते वृद्ध वीर-मूर्ति वीरगति को प्राप्त हो गया। सिक्ख सैनिकों की मदद करने वाले दल को रोकने के लिए अपने ही गद्दार तथा धोखेबाज लोगों ने सतलुज नदी पर बने पुल को तोड़ दिया, जिस कारण सिक्ख सैनिकों की सहायता ना हो सकी और वह विवश होकर मृत्यु पर्यंत लड़ते रहे। छल के कारण सैनिकों का सारा साहस, उनकी वीरता एवं पराक्रम विषाद-ग्रस्त हो गया। विधाता ने भी जैसे रूठकर उनका भाग्य बाएं हाथ से लिख

दिया हो। इसके बाद पुनः शेर सिंह अपने अतीत का स्मरण करता है कि किस प्रकार से अपनी इस जन्मभूमि पांच नदियों से गिरे प्रदेश पंजाब को यवन अर्थात मुसलमान शासकों से छीनकर इसे स्वतंत्र कराया था। सुरा-सुंदरी का भोग करने वाले विलासी यवनों को पराजित कर इस पंच-नद को वासना की छाया से मुक्त करा के यहां प्रेम का साम्राज्य स्थापित करने वाले वीर सिक्ख योद्धा अपनी आखिरी सांस तक जी-जान से लड़े और अंत में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

कहेगी शतद्रु-शत-सगरों की साक्षिणी,
सिक्ख थे सजीव-
स्वत्व रक्षा में प्रबुद्ध थे।
जीना जानते थे,
मरने को मानते थे सिक्ख
किंतु आज उनकी अतीत वीरगाथा हुई
जीत होती किसकी
वही है आज हारा हुआ"
"ऊर्जस्वित रक्त और उमंग भरा मन था
जिन युवकों के मणिबंधों में अबंध बल
इतना भरा था
जो उलटता शतघ्नियों को! [6]

शेर सिंह सैनिकों के पराक्रम को याद करता है, जिन्होंने अपने स्वत्व, आत्म-सम्मान, स्वाभिमान एवं आत्म-ज्ञान के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। असंख्य सागरों, महासागरों की एक-एक बूंद इस तथ्य की गवाह है कि सिक्ख योद्धाओं ने अपने स्वत्व की रक्षा के लिए कितने अधिक दृढ़ निश्चयी थे, उन्हें देश के लिए ही जीना और देश के लिए ही मर जाना होता था। परंतु आज उनकी वीरता, साहस, शौर्य और पराक्रम अतीत के चिन्ह बन गए हैं, उनकी अमर कहानी अतीत के पन्नों में दर्ज़ हो गई है। जो विजयी थे जिन्होंने केवल विजयी होना ही सीखा था, चाहे वह जीवन पर हो या मृत्यु पर, वे आज दुर्भाग्यवश पराजित हुए हैं। शेर सिंह पुनः अपने पौरुष का स्मरण करते हुए कहता है कि जो वीर सिक्ख सैनिक शहीद हुए उनके भीतर ऊर्जा से युक्त रक्त का संचार होता था, उनकी भुजाओ में इतना बल था कि वे सैकड़ों प्रक्षेपास्त्रों को भी नष्ट करने में समर्थ थे। उन वीर योद्धाओं को छल से युद्ध में पराजित किया।

"गोले जिनके थे गेंद
अग्निमयी क्रीडा थी
रक्त की नदी में सिर ऊँचा छाती सीधी कर
तैरते थे-
वीर पंचनद के सपूत मातृभूमि के-
सो गए,प्रतारणा की थपकी लगी उन्हें
छल -बलिवेदी पर आज सब सो गए।
रूप भरी, आशा भरी, यौवन अधीर भरी,
तुतला प्रणयिनी का बाहुपाश खोलकर,
दूध भारी दूध-सी दुलार भरी माँ की गोद,
सूनी कर सो गए।" [7]

शेर सिंह उन वीर योद्धाओं के साहस एवं पराक्रम को याद करता है जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद हो गए। उनके तोपों के गोले गेंद की तरह थी, वह अग्नि से घिरे हुए मैदान में उन तोप के गोलों से खेला करते थे। अपने शरीर के खून की एक-एक बूंद को वे न्यौछावर कर देने में ही अपने जीवन को धन्य समझते थे, खून की नदी में वह अपना शीश उठाए, सीना ताने तैरते थे। उस रक्त की नदी में भी झुके नहीं, उन्होंने हार नहीं मानी वे अपना मस्तक उठाए अपने सीने को ताने शत्रुओं से लड़ते रहे और अंततः इस पंजाब प्रदेश के इस मातृभूमि के सच्चे सपूत वीरगति को प्राप्त हुए। धूर्तता, चालाकी अथवा धोखेबाजी ने ऐसी थपकी लगायी, छल रूपी बलिवेदी पर वे सो गए तात्पर्य है कि छल एवं धोखेबाजी के चलते वीर योद्धा शहीद हो गए। मातृभूमि के सपूत प्राणों के मिटने की परवाह नहीं करते, वे सब कुछ त्याग सकते हैं, अपनी प्रणयिनी के रूप-सौंदर्य, आशा भरी चितवन, यौवन रस से सिक्त बाहु-पाश को खोलकर वे मृत्यु को गले लगाना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। मां की दूध भरी स्नेहसिक्त दुलार भरी उसकी गोदी को सूनी कर वह वीर योद्धा मातृभूमि के लिए हमेशा-हमेशा के लिए सो गए।

"हुआ है सूना-पंचनद
भिक्षा नहीं मांगता हूँ
आज इन प्राणों की
क्योंकि, प्राण जिसका आहार,
वही इसकी रखवाली आप करता है,
महाकाल ही, शेर पंचनद का प्रवीर रंजीत सिंह
आज मरता है देखो,
सो रहा है पंचनद आज उसी शोक में
यह लो यह तलवार लो
ले लो यह थाती है।" [8]

शेर सिंह ने अपने सस्त्र समर्पित करते हुए आत्म-समर्पण से पहले जो मार्मिक ऊद्गार कहे उसका चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है। सिक्ख योद्धाओं ने शत्रुओं के दांत खट्टे कर दिए, लेकिन अंग्रेजों ने धूर्तता से सिक्खों की तोपों को बेकार कर दिया। शेरसिंह कहता है कि मैं प्राण बचाने के लिए अपने शत्रुओं से भीख नहीं मांगूंगा न ही गिड़गिड़ाऊंगा। यह जीवन तो यमराज की धरोहर है, महाकाल ही इसकी रक्षा करता है और महाकाल ही इसको नष्ट करता है। इस कविता के अंत में रणजीत सिंह का उल्लेख हुआ है कवि का कथन है कि जैसे इस पंचनद प्रदेश के सिंह समान वीर योद्धा महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु आज हुई है, यह पूरा पंचनद प्रदेश अपने उन वीर योद्धाओं के शोक में मौन है। अपने शस्त्र समर्पित करते हुए शेर सिंह कहता है कि यह लो मेरी तलवार, यह हम सिक्खों के जीवन की अमूल्य धरोहर है, हमारे संपूर्ण जीवन की संचित पूंजी है यह मैं तुम्हें देता हूं। यहाँ 'शेर पंचनद का प्रवीर रंजीत सिंह आज मरता है देखो' इस पंक्ति के आधार पर डा० कन्हैया लाल 'सहल' का कथन है "शेर सिंह का प्रयोग रणजीत सिंह के लिए हुए जान पड़ता है।" [9] डॉ० सहल का यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता, अभी तक किसी भी ऐतिहासिक शोध में यह बात सिद्ध नहीं हुई है। अतः शेर सिंह और रंजीत सिंह दो अलग-अलग चरित्र हैं। यहाँ शेर सिंह के हृदय में उमड़ता देश-प्रेम, जाति की गरिमा आदि भावों की वीरोचित अभिव्यक्ति की गई है, साथ ही लाल सिंह जैसे धूर्त और मक्कार व्यक्ति के प्रति घृणा तथा पराजय के कारण क्षोभ का भाव भी व्यक्त हुआ है।

संदर्भ

1 हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ-369
2 प्रसाद रचनावली –ब्रजरतन
3 वही
4 वही
5 वही
6 वही
7 वही
8 वही
9 आलोचना के पथ पर- कन्हैया लाल' सहल, पृष्ठ -१६१)